सीखने के लिए बातचीत: प्राथमिक गणित

हिन्दी
कमेंट्री: इस प्राथमिक गणित की कक्षा में, शिक्षिका, विद्यार्थियों की जोड़ियाँ बनाकर उन्हें - सवाल बनाने और उनका हल ढूँढने हेतु, एकदूसरे से बात करने के लिए प्रोत्साहन देती हैं। **शिक्षिका:** जैसे कल हम मेले से संबन्धित एक कहानी बनाए थे? वैसे आज तुम लोग कहानी बनाओगे और हमको सुनाओगे। कि जो तुम लोग question बनाओगे या कहानी बनाओगे जो तुम लोगों को समझ में आता है वो अपनी मर्ज़ी से बनाओ, बस ये हो कि तुम लोग की अपनी real life से बना हो। बाज़ार जाते हो, मेले में जाते हो, घर के आसपास कुछ ऐसा होता है। जो भी pair बनता है दोनों बच्चे आपस में बात करेंगे और अपनी कहानी, एक दूसरे को सुना लेना; कि हम ये वाला सोचे थे, और इसमें देख लो, हम लोग कुछ मिला के, कुछ और अच्छी कहानी बन जाएगी क्या? दोनों कहानी, अपने मन से मिला लेना। कमेंट्री: विद्यार्थियों को जोड़ियों में खुद कहानी बनाने देना - उन्हें अपने गणितीय कौशल के लिए आत्मविश्वास महसूस करने में, और एकदूसरे से सीखने में - मदद करता है। **विद्यार्थी १:** बीस रुपये... दाल लायिन... **विद्यार्थी २:** कितना रूपया ले के गए थे? **विद्यार्थी १:** पचास रुपये, उसमें से तीस रुपये बचे। **विद्यार्थी ३:** दूसरे के पास, एक-हज़ार रुपये थे। वह, वहाँ से... मोबाइल की दुकान पर गए। **विद्यार्थी ४:** एक, दो, zero. १२० हुआ? अब यहाँ पर पहले एक लिखें, फिर दो लिखें, फिर zero लिखें। एक-सौ-बीस, फिर यहाँ पर जोड़ेंगे, इस से, फिर इस से, फिर इस से... **विद्यार्थी ५:** इत्ते आम तोडिन? **विद्यार्थी ४:** देखो, चीकू एक-सौ-बीस आम तोडिन?

विद्यार्थी ५: हाँ, और मीकू...

विद्यार्थी ४: और मीकू, दुइ-सौ-तीस...

विद्यार्थी ५: ठीक है।

शिक्षिका: दोनों अपने pair के साथ आओ। एकसाथ, दोनों class में enter करो।

कमेंट्री:

अगले पाठ में शिक्षिका विद्यार्थियों को मेहमानों के लिए एक दावत और उसके बजट की योजना बनाने का काम देती हैं। इस काम को करने के लिए जोड़ियों में बात करना महत्वपूर्ण है।

शिक्षक अपने विद्यार्थियों की समझ कैसे विकसित हो रही है यह जानने के लिए जोडियों की चर्चा सुन सकते हैं।

विद्यार्थी ६: रवा पाँच-सौ रुपये का...

विद्यार्थी ७: और तेल लाएँगे, ma'am...

शिक्षिका: पाँच किलो रवा, कितने का?

विद्यार्थी ६ व ७: पाँच-सौ रुपये का।

शिक्षिका: पाँच-सौ रुपये का?

विद्यार्थी ७: Yes, ma'am, और तेल लाएँगे...

शिक्षिका: बहुत महँगा है! भैय्या। चले ठीक है।

विद्यार्थी ६: तेल सौ रुपये का...

शिक्षिका: Refined...

विद्यार्थी ६: Yes, ma'am.

शिक्षिका: लेकिन रवा तो सोचो, पाँच-सौ रुपये का नहीं आएगा, पाँच किलो रवा।

विद्यार्थी ७: Ma'am, दो-सौ रुपये का आएगा, दो-सौ-बीस का...

शिक्षिका: दो-सौ-बीस का आ जाएगा?

विद्यार्थी ६ व ७: Yes, ma'am.

शिक्षिका: चलो, दो-सौ-बीस थोड़ा तो समझ में आता है।

विद्यार्थी ८: दस समोसे, दस लिये?

विद्यार्थी ९: यहाँ पर पहले समोसे लिखे हैं, अब दस यहाँ पर लिखो।

विद्यार्थी ८: अरे वो, अब लिख दिए... अब कहाँ लिख पाऊँगा साठ रुपये?

विद्यार्थी ९: ना लिखो।

विद्यार्थी ८: पेप्सी...

विद्यार्थी ९: पेप्सी साठ रुपये, अब लिखो यहाँ, लिखो साठ!

कमेंट्री:

जब विद्यार्थियों की समान क्षमता वाली जोड़ियाँ बनाई जातीं हैं, तो वे अक्सर बिना गलत होने की चिंता किये, काम के बारे में बात करने में, ज़्यादा सहज महसूस करते हैं। आमतौर पर शांत रहने वाले या शर्माने वाले विद्यार्थी भाग लेने का आनंद लेते हैं। आप अपनी कक्षा में विद्यार्थियों को अर्थपूर्ण बात करने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं?

विद्यार्थी १० साक्षात्कार:

पढ़ना अच्छा लगा... बनाए थे... ये सब अच्छा लगा... जोड़ा...

विद्यार्थी ३ साक्षात्कार:

हमको बनाने में अच्छा लगा, और ma'am पढ़ाती अच्छा हैं।